

हुं न
५६

सखी तं माधवके निकट जा
माधवके सेहें ॥ कंदर्प के राजा
हैं ॥ नानें कंदर्प राजा के मन
में प्रवेश हो विलास कें करि ॥
कुसुम पत्रवक्रीण ज्याविषं
विलास करि ॥ २ ॥ कोकिला को
सोख रहे तुला रोना करि
च ना मृग प्रगट करे ॥ बीज
री की हे आभा सो मेह सो मि
ली हे ॥ जल धन नें महा उत्तम
पवित्र सिज्या पर विलासक

प्रतिनिव वगी ॥ सिज्या बहु
नको को मनवां छिनदा
नाहे ॥ ३ ॥ हे विकस निमरसि
जनने प्रीये ॥ तुम सहक पि
क सादिका को किल कंठी ॥
एसववच ना मृग क रि ॥ हरि
जे दुःख हर्गो ना को दुःख हरि
॥ ना को मुख को करि ॥ हे आली
तं अति निगूढ रस को प्रगट
करि ॥ हे इंदीव राक्षी कुरको
बहुन काल भए हैं ने रोध्या

नकरन॥ अब तू प्राप्न भई हो
 अब तुझा रे एक हो ने मे कह
 भय कर न हो॥ आवस्य कर
 रो॥ यह सुंदर नंद नंद न तुम
 रो भावरूप॥ गूढ कंदर्प हो॥
 हे सरोज मुग्धाक्षी॥ यह तु
 ह्या रो भावरूप गूढ कंदर्प हो
 सो अंतर्गत बाहिर प्रगट भ
 यो हो॥ के सो भाव हो॥ जो अंत
 कोटि रस महारस को मरस
 सो मिल्यो हो॥ कंदर्प ही प्रगट

भयो हो॥ या भाव को ना मक्ष
 ह्य॥ ना को तुम आपुने स्वास्
 न को अपने हृदय में प्राप्न क
 रो॥ परम तत्व हो॥ दी॥ सम्वी ने
 प्रगट भावरूप दिखाए॥ ना
 पाछे प्रीयाजू कछु क न म्म
 होत भयो॥ और निरछे कटा
 क्षरि देखे॥ ना पाछे उदय
 भजो मंजीर दूधरु को नाद
 सो मंजीर नाद ही परमानं
 दरूप हो॥ सो ठाकुर में प्रवेस

होन भयो ॥ गानें प्रभून को कें
चे रोम भए ॥ ओर ठाकुर के
जमंदि रमें सुगंध की वपार म
सरी ॥ ओर भूमर आनंदि नभ
ए ॥ ७ ॥ ठाकुर के हृदय विषे
कभी याजूहो ॥ नाइ समाध को
देखन भई ॥ श्री याजू को प्रथम
समागम को आगम हो ॥ गानें
कुरकों सात्विक आविर्भाव हो
जे सें श्री गंगा जी अपने पि
के मिलि वे को सहस्र धारा बं

होने से ठाकुर को मिलि वे को
श्री याजी के अनेक अंग दुलार
करन हो ॥ ठाकुर जी विषे प्रिया
जू की करुणा कटाक्ष भई ॥ सो
ठाकुर को अनेक भाव करि बु
द्धि होन भई ॥ ८ ॥ ठाकुर के भी न
र श्री याजू को स्वरूप हो ॥ सो रोमां
च ज्वर बाहिर प्रगटो ॥ ९ ॥ ठा
कुर कंदर्प को दृष्ट हो ॥ गानें श्री
प्रियाजू के नूपुर के नाद सो
अव्यक्त मंच हो ॥ १० ॥ एतका रमा

७
५८
जही वक्ष फलिन हो न हो ॥ श्री प्र
या जू को मुख चंद हो ॥ ओर ने
जरूपी मी न हो ॥ सो ठाकुर के ह
इलक लों अवलं बि रहें ॥ वि
विधनी ल की आभा ॥ जे सो नि
ज विविधनी ल की आभा ॥ जे स
निकुं ज विविध सुम सो ॥ स
छा ठाकुर के श्री अंग विषे प्रति
बिंब सहित ॥ ठाकुर को सोंदर्य
सी मां देखे ॥ सर्वांग मूर्ति बंग
वही प्रगट भयो ॥ मान सर्वांग

बे प्रति देखे प्रिया जू ॥ १३ ॥ श्री
ठाकुर जी ने आलिंगन की आ
संका कदी ॥ प्रिया जू ने गोद वना
विविध पुष्प विषे प्रिया जू को
प्रति बिं ठाकुर कर न हो ॥ हे आली
याने आधिक्य रस सर्व सुकुं आ
पुनी प्राण पिपा को प्रीति करि य
ने महात्म्य प्रगट करे ॥ १४ ॥ प्रिया
जुगल कां म अ भि प्राय करि दे
खो ॥ नव श्री राधा जू की सखी स
ह चरी ॥ श्री प्रिया जू सो मुख सि का

अलजा श्री याजूकी ले करि बाहि
 र आवन भई ॥ बहु नही काल को
 भोग्य धुंज को सांचो ॥ ना करि अ
 पुने पि य को बे ग ही अंग राय
 रि कर सो ॥ ओर न स्व स्वरूप
 ला करि ठा कुर को जी गो ॥ आदि
 वादि ही नो वि च स र वी नो ॥ १६ ॥
 इति श्री सप्तमहंता सप्तप
 श्री मी याजू को अति भर करि कं
 दर्प भाव द्यो ॥ नामे तो ल ज्य
 दुरि क सी ॥ तव श्री स्वा मि नी जी

कुसुम सि ज्य पर कटाक्ष कह
 दे ॥ तव श्री याजू प्रणि ठा कुर मि
 तम ॥ १७ ॥ हे का मि नी यह भूमि
 विषे मे दु स्मारे ली ये सु गंधिन
 सि ज्य की रत्न ना की नी हे ॥ ना ने
 वि वि धि भाव करि वि द्या यो ॥ ना
 सि ज्य पर तुम मे रो मनो र द्य पू
 र्ण करो ॥ हे मधुर ग्राहक रि अच्युत
 हस गा मि नी राधे तु स्मारे चरण
 कमल की अति सय को मदन ना
 सो पुष्प कु सि ज्य पर जी ने जो

नैपुष्पको जीत्ये चरणकमल
धरो ॥ पुष्पकोंकपाकरो ॥ ३ ॥
कुर कहत है ॥ जो सिज्या परभे
हरो ही विछाये है ॥ मापर विजा
सकों करो ॥ और आपुने माण
तम को अंग संग करि सीतल
रो ॥ हे प्रिये तुम महाफल वत है
मेरे उर विषे धरो ॥ मेरो दुःख
दिक रो ॥ छुड़ धाँटिक के गह
ट करि ॥ और कामन सके वचन
ना ओ ॥ ५ ॥ श्री ठाकुर जी प्रीण

प्रतिकहत है ॥ जो मेरो अनंत को
दिकाल को संचित पुन्य पुंज ॥
आर उग्रतपस्या करी ही गोह
वनो दुर्लभ है ॥ सो मेनुमकों तुम
आसारूप जो लगाना के अंच
ल करि प्राप्त भई होई ॥ सो महा
बाक्य करि कहत है ॥ सोह मेनु
हारे अनन्यहं ॥ हल अस्मन्
॥ और तुम ही सर्वोत्तम भाव करि
मेरी ही अनन्य हो सो मेनु हारे
ही मिलनार्थ प्रगट भयो हो ॥ ७ ॥

हु.न.
६२

ओर तुमही मोकोंर निशंन सु
ख देवे निमि प्रगट भए हो
तुम तो विनं व कर न हो ॥ मेने
ह्यारो रोमां च न हो ॥ रस के
कुरवा हिर आव न हो ॥ हे मु
झी प्रिये तुझारे सवोंगर सम
यह ॥ नाकों तुम ठांको मति ॥ ब्रह्म
में रूप वंत कहा पुष्प न तें दष
जा न हो ॥ हे प्रिये महारस क
ना मृत करि भीतर रस ना क
रो ॥ ओर वह न काल को सां व

राखो हे मनोरथ ना करि म
न पूर्ण को ॥ १० ॥ पूर्ण ना कह
नहें जो अग ना दिक करि ॥ न
का रादिसि स्कार क्षत्या दि कु
जन नादिक ॥ अ प भाष णा दि
क के ॥ ओर अने कबंधन करि ॥
रमण ओर भाव करि ॥ मुस क्या
नमणि तरणि न ॥ अ व न कुंज
न ना के जान न वारे टा कु र ही हे
॥ ते सें करि मोकोंर मा ओ ॥ ठा कु
रजू प्रिया जू प्र नि कह न हो ॥ सा

नहल सु रगत व हो न हे ॥ श्री
प्रिय को पर मत ल र स को पर म
ज्ञान हो इ ॥ न व पूर्ण र स को प्राप्
हो न हे ॥ न व श्री या जू भी य हो न हे
ओ र श्री या भी य हो इ जान हे ॥ सो
मु धि ना ही रह न एक न हो न हे ॥
श्री या जी र नि सं ग म मे अ नि ध
र हो ॥ म धु दै ल्य के मा र न वा रे अ
र म न म थ को म थो ॥ ए से ठा हु
र के न र व स मू ह सों पू जी हो ॥
सी श्री या पर मा नंद सों भ ज हो ॥

छ क र को र स श्री या जू में आ यो
श्री या जू कों छ क र में गो सं ग म
की रेल मई ॥ सो प्र से द की रेल भे
सो सो भा हो न मई ॥ श्री या जू क द
क्ष र स अ गा ध स मु द में डू व ॥ अ
र अ लिं ग न र स मे म नु हो न भ
ए ॥ गो ह सं भा र र स क ह न हो ॥
सो अ लो कि क सा म थ्य सों ॥ १४ ॥
सो गो पी ना थ र स तो अ गा धि र
स हो ॥ सो को न क हि स के ए ही जा
ने ॥ १५ ॥ अ व स्वा धी न प नि का ॥

श्री श्री गुरुओं का कुरनेर भाई
सोना प्रमी गुरु ने अर्पने वस
की ने ना मनी कहन भई ॥ १६ ॥ जो
तुम मेरो अंगार को हेर मल
करि मा निकें दिवै या मेरे केस
पास विषें एणी रबी न होइ गइ
हे नहां फूल भयो ॥ ओर मनोह
र चंदन ओर कस्तूरी की रेख
खिस गइ हे सोर च ना क सो
कुर कहन हे हेस सो जा क्षी ॥ ना
ऊपर मुक्ता को चंद लो धरो ॥

चंद लो कस्तूरी की आइ ऊपर
मानों ॥ नौन न चंद नुस्त्रा रे भो
ग्य ॥ कल स विषें मकर पत्रिका
करी ॥ नापर नुस्त्रा रो क मल को
लखि विआम करो ॥ १७ ॥ हे मुग्ध
क्षी भो निभो निके आभरण कर्ण
विषें रचो ॥ क मल के कर्ण फूल
करो हे कंद र्प गवहे रो ॥ १८ ॥ हे
बिहु चाबु जा क्ष ॥ क्ष ना दि युक्त ॥
कपोल विषें नुस्त्रा रो रखा म स्वर
पको प्रति विव को मेरो कपोल

सदां वहो ॥ २० ॥ हे अंगना धनु
ह्यार संग करि ॥ मिटि गयो अंग
राग मेरो ॥ ओर मेरे लोचन भंग
को धुंमने लोचन धोइ के ॥ आपु
ने अंग को अंगन करो हे नाथ ॥
हे अंग आपुने पीतांबर करि मे
को नीवी की रचना करो ॥ मेरे क
टिके विषे गोसंवर रिपु को जी
ति ॥ कटि मेख ला की रचना को
करो ॥ २२ ॥ अथ नमधुर शब्द
युक्त दोऊ धुंधरु विषे चरण

रा ॥ विछिया चरण की अंगु
री विषे करो ॥ प्राण प्रीया जो
श्री राधाजू तिन को अंगुंगार
करवाओ ॥ अलो किक चम
ला सी सिंगार रचना की ने
जो मनह को अंग म्यहो ॥ २५ ॥
हे आली मे तो एसें मान नहं
॥ जो ठाकुर विविधिकंदर्प के
समस्त स्याई भाव प्रगट क
रि धरे हे ॥ श्री राधाजू के बस
होइ के भावरूप विविधिम

रु.न.
६६

नोर वही धरे हो॥ मनोरथ के
समूह की समूह गये हो॥ १५॥
इति श्री अष्टमहंतासंस्कृत
यह जो गधा देवी की बहन का
लें सेवा ठाकुर आपुन की ना
ता के वस करि॥ मीन के भर करि
कें॥ सुमुखी आपुनो सकल स
सर्व स्वदेन भो॥ ओर श्री माधव
निवर के कंठ विषे॥ आपुनो पस
र्यो जोह स॥ नाकरि भागसद

सपादन करि वें को॥ पाकुर के व
सहोदकें कहति भई॥ जोहे पुरुष
कुरगति कहन भई॥ जोहे पुन
भूषण नुह्यारो सिंगार में चना
करो॥ नवदाकुरजीने कह्यो हो॥
मुगधशीमोको बहन का को अ
भिलाष वांछि न हो॥ सिंगार मो
कों करो॥ या मकार ठाकुरने कह्यो
नदनं रमी या जू विधि पुष्प
ही करि॥ ऊंचे माथे पर वें एगि
हो॥ पाछें कर्ण विषे दोऊ चं पाके

विषं कपोल विषं मकर पत्रिक
केचि च करन भई ॥ ना पाछे
शरि को निरखो होय रेखा
आड करि के ॥ ता को आशुने
जमुका को निलक करन भई
॥ ३ ॥ ठाकुर जी के नेत्र विषं सह
स रेखा अंजन देन भई ॥ सुगने
नी भेषव नाचो ॥ सुगने नीम
याजूने आहुने आ ॥ भूषण
पहिराए ॥ पोनि आदि ॥ और
कुरको सहज मंदहास्य मुक्त

सुंदर मुख चंद्रको चंद्रन कस्तूर
प्रगट मुक्त विषं ॥ ४ ॥ प्राण हने
श्री प्रगट मुक्त विषं ॥ ४ ॥ प्राण हने
अनिश्री निजो श्री प्रीया जी निज
कहत कमल के स्पर्श ने ठाकुर
की रोमावली टाटी होत भई ॥ ५ ॥
रखल विषं मकर पत्रिका लि
खत भई ॥ ६ ॥ ठाकुर के ऊंचे उर
खल विषं कुच की रेखा ने उप
जी सोभा ॥ सो देखि के प्रीयाजू
विस्मय भई ॥ जो राधाजू के भें
नव प्रीयाजू प्रसि सखी कहत भ

॥ श्री चरण विंद विषं ॥
गो भई ॥ चरण विंद करि विवि
तऊ पर महा विरह करि विवि
त्र करत भई ॥ और चरण रवि
द अति मुकुमार हो ॥ ताने न क
कारण का यहो न हो ॥ ताने न क
रत भई ॥ ५ ॥ पापकार के जो क
की सों दूर्य ना एक न करि कों ॥
आनि राखी हे गो विंद विषं ॥
तऊ पर गो पसुंदरी भेद र
चना विषं सो सहज की नाही
भासत हो ॥ सो गो तु कही हो ॥ श्री

॥ श्री गज कौन से ॥ श्री गज
को न सी यह आचर्य भयो ॥
ता पाखें आपुनी नीवी ठाकुर
पहिराय करि ॥ तऊ पर दुख
टिका शहाय मान पहिरावन
भई ॥ ८ ॥ आपुने दुंदुबस ठाकुर
के चरण र विंद विषं पहिराव
न भई ॥ और चरण पद्मवर्मा
अंगुली विषं विछिया आदि
हुं पहिरावन भई ॥ और अप
ने कुच कुंम के ले पकी सो भा

हु.न.
६८

राधाजूके प्राण मे हहे ॥ ना मे
हज आ नंदात्मक भासने हे ॥
श्री प्रियाजूने सहज गोपसु
दरी वेस को एक अंग देखो
ना मे ही मज होइ पुरसर सभा
वहो न भयो ॥ ना समें ठाकुर श्री
प्रियाजू के कपोल में स्व रूप
रसी में ॥ आपुनो सुंदरी रूप
को प्रतिबिंब देखो ॥ ना करि
ठाकुर ह अखं न ह विन भए ॥
श्री प्रियाजू को पुरुषादन भा

वमें निविष्ट ना कूं ठाकुर ने वेणी
ग्रहण करि चुंबन करत भए ॥
नव ताही क्षण विषे कांम भावि
नऊ चो रोम होत भयो ॥ १२ ॥
पहिले कियो जो ठाकुर के एक
अंग देखि के श्री प्रियाजू समुभ
ए ॥ नावशा भावने जागरी नि
भाव ही भई ॥ नव हर्ष करि यो
रील जि न ह भई ॥ मंद हास्य क
रि विशेषः करि ठाकुर को श्री
मुख चुंबन ॥ ना करि हस विन न

हृ.ने. ७०
नुहोइके अनुगग के भन कहि
अ साधाजूदा कर पनि कहन भ
ई ॥ १३ ॥ हे माधव तुझा सो यह
गोपसुंदरी बेधको मे कहो जनि
वर्णन करूं ॥ मेरे वचन को अ
र मन को नोग म्य नाहीं ॥ मन
ओर वाणी पंगु भई प्रत्येक अं
ग के असंख्यान को टिसो भा
के समूह में मर्यादा उलंघन भ
ई ॥ १४ ॥ श्री याजू कह नहे ॥ जो प
ह तुझा सो मुख चंद गो न होइ

नो कहा है ॥ मेरे कुच दोयन क
नो कहै कुच आश्लेष है ॥ मेरे
संग ने कुच नाहीं नो कहा है ॥ मेरे
सूर्य की नाहीं नो कहा है ॥ को
नो चन रूप इंद्रीवर कमल को
आनंद है ॥ नाने कमल है ओष्ठ
नाहीं काहे नें मेरे मुख चंद कु
मल महो छो है ॥ जो चंद हो तो नो
भल की कुमुदनी हो न ॥ सो नो
उल्लव रूप है ॥ या प्रकार को तुझा
सो मुख ॥ कवी स्वर है के मनव च
न को विषय नाहीं ॥ तो पीयाजू

कहत है ॥ जो यह में मानत है ॥ जो
मेरो भाग्य को ऊ एक परम भा
ग्य सीमा पुंज को अति शय वह
न का लक रि सं चो रास अहु
भयो ॥ सो अव प्रगट भयो यह
त्रिसत्य ॥ मेरो भाग्य राशि है ॥
नें मो कं प्राण ते पीयत महो हि
॥ १५ ॥ अथ वा चंद्रमा हे ॥ काहे ते
मेरो चंद्र रूपी नेन विकारि है ॥
अथ वा तुलसी वां ली रूप मधु
के बिंब चंद्र न है ॥ कमल श्रेष्ठ

थ को बदन है ॥ काहे ते जो कमल
तो मधु को चंद्र नि है ॥ सो में जान
न नाही के अथ वा बदन लाव एवा
मन को सो वर है ॥ काहे ते जो बद
न सो वर में नयन रूप होय क
मल प्रगट हो ने ते ॥ के अथ वा को
उपशय ॥ अतिर्वचनीय सब सिं
गार मरूप मानो सर्व स्व है ॥ १६ ॥
यह सुंदर जुवनी बदन कं मे क
रत है ॥ जो अहो पुरुष को ऊ ॥ नद
ने मर श्री गोपिका जी कं मो हो ऊ

हु.न.
७२

अनुभवमाणसिद्ध अंगकार
करणो॥१७॥ प्रीया जू कह न हे मे
मे प्र निज्ञा कर न हे॥ जो हे प्रीय न
म नि अय क रि कह न हे॥ जो प्र ह
ह्यारो श्री मुख सो मे रो ह दो श्र
हिर प्र गट हो न हे॥ ओर ना ही न
ही मो मे रो वेष तु म मे के से प्र वे स
हो इ ना ते तु म मे रो सह ज रह हो
न व मो एक ज हो इ ही॥ तु म ज व
व नी वेष क रि ह ल ल नि न वि भं
हो इ रूप क रि म धुर अ य न वे

गान करो॥ न व ही पुरुष को
हं जु व नी भाव स मु द म र्पा दो उ
लंघन क रि॥ स्त्री भाव को म नो
रय हो न हे॥ य द्य पि नु ह्यारो जु व
नी वे स हे॥ तो ह नु ह्यारो अ पां ग क
दा स अ नि शय म र्पा दि हे॥ आ ए
करि मान न हे॥ ल ज्जा धी र दू रि
क रि जार न हे॥ प्रीया जू के से हो
व च न अ म न को आ धार हे॥ ने
दा कुर को मंद भाव॥ ओर मंद हा
स्य उ प ज्यो न व प्रीया जू आ धी

हु.ने
७३

नहोइकें बेठी॥ नवठाकुरहदप
सोलगायलीये॥ २३॥ प्रथम
कीसरवी श्री प्रीयाजू सो सुंदर
होइ॥ तेसें ठाकुर कोर मावत
ई॥ सो प्रीया माधव सो अधर
को आसव प्रीवकरि मंदहुन
भई॥ सो राधे ओर माधव होऊ
न कीरति केलमें दोऊ प्रागे॥
सो रति केलमें अनुभव कर
हो॥ तासमे तो में नाहीं जाना
तिन को अनुभव करि देखे॥

नदनर गोप सुंदरी वेसरयो
हो॥ सो नीवी फूंदी बोलिक
रिछुइ दंडिका आदि जुवनी के
वस के आभरण सो लि के ओ
र लक्ष्म चादर प्रीयाजू की ओटा
य॥ श्री कल विहार करन प्रीया
जू के कुच ऊपर अदोलाय मा
नवन माला॥ ओर ठाकुर की दो
ऊ भुजा करि आलिं गिन॥ जे से
महागजराज की नांही अपुने
जीवन विषे अथवा जुवनी व

हु.न.
७४

न हंसा विषे ॥ अथ या श्री हंसाव
न मे नवनी न विषे कीडा कर
न हो ॥ २३ ॥ उ न्य न ह स्मी जे से वे
स्मा मर्यादा नो टिके ॥ श्री हंसावन
विषे कीडा कर न हो ॥ काह मोरनि
कीडा ॥ क हं फल चु निवो ॥ काह
सिज्यार चना ॥ काह मा ला को
हि वो ॥ काह अधर मधु पान ॥ का
ह एक गान ह ॥ काह मीया जू के
स पर बाहु ॥ श्री यमु ना जी के
न विषे ॥ या प्रकार कीडा कर न हो

श्री कृष्ण श्रमि न गात्र ॥ उग मगा
न रात्रि के उ जा ग रे ॥ आल स
वलिन विलास से कीडा कर न
॥ एगद स श्री कृष्ण श्री रा धिका
जी को अनिसुख को विस्मारी
आशिर्वाद दीनो ॥ २४ ॥ अथ स
वी पर स्वर कर न हो ॥ जोह भंनो
श्री मीया जू कीदा सी हो ॥ जिजम
नी मे याने उपगान मोक्ष ह ना हो
अन्य कह आस का कर न हो ॥ हे
सह चरा स्वा मिनी जू की यह का

ह.न.
७५

व्यकथा करि निश्चय ॥ जो श्री स्वा
मिनि जीविषे प्रतिफलित भये
॥ जो प्रीयाजूने अपनो कीनो प
रम अनुग्रह ॥ ताके बस तेह मवि
षे उनकी काव्यकथा प्रतिफलि
त होइगी ॥ २५ ॥ ऊपर कह्यो जोह
मको सदां सुख हो ॥ और प्राण
नाथ प्रीयाजूह मऊ पर अनुग्र
ह करो ॥ २६ ॥ प्रथम की सरवी
कहति हे ॥ जो गोपीजन के च
रण कमल विषे सेवक दासीक

शि॥ इनके प्रेमा मृत में डूबिके
इनके मंदहास्य ने जीते हों॥ अमृत
त समूह॥ ताकरि निकुंज विषे॥
शृंगार रस श्रेष्ठ रचना की नी॥
सो पूर्ण होत भई॥ २७॥ याकारण
ते भाव बोध में साक्षी भूत दा मो
हर दास॥ चाचा हरि वंस सारिखे
॥ श्री गुसाई जी श्री विठ्ठलेश्वर रा
य जी ने प्रगट की नो जो ग्रंथ सो
संपूर्ण भयो॥ २८॥ इति श्री विठ्ठ
लेश्वर विरचितं शृंगार रस मं

डनंनामहुलासनवमंसंपूर्ण
समाप्तम् ॥ २॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

श्रीकृत्नायनमः॥ अथ श्रीआ
चार्यनकोस्वरूपभावलिख्यते
श्रीआचार्यजीकीकृपाबलते
श्रीआचार्यजीकेस्वरूपमेंस
बसंदेहदूरिकरि॥ जारीतिसों
श्रीआचार्यजीकोध्यानकर
नोसोकहियतुहे॥ तहांश्रीपूर्ण
पुरुषोत्तमपंचाध्याईमें॥ देह
इंदियःमाणअंतःकरण॥ जीव